ध्यान-कक्ष
समभाव-समदृष्टि का स्कूल

सत्-संगति की महत्ता

सतयुग की पहचान है यह, मानवता का स्वाभिमान है यह

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

मार्गदर्शक बल
(Guiding force)
सतवस्तु का कुदरती ग्रंथ

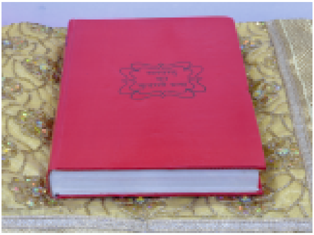

पढ़ो, समझो व अमल में लाकर
श्रेष्ठ मानव बन जाओ।

इसे पढ़ने के लिए इस QR Code को स्कैन करें।

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org | website: www.satyugdarshantrust.org
© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.) | ISBN : 978-93-85423-80-2

प्रथम संस्करण | अप्रैल, 2025

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं, ज्ञान को अपनाओ और

निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह,

इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो

ओ३म् अमर है आत्मा,

आत्मा में है परमात्मा

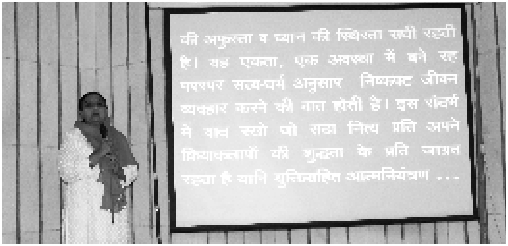

सच्चाई
धर्म
सम

सत्य को विकसित करने के साधन

सजनों जैसा कि विदित ही है कि सत्य वह है जो अगम, अगोचर, अविनाशी व नित्य व्याप्त है। सत्य वह है जो कभी नहीं बदलता व जिसका कभी अभाव नहीं होता। सत्य निरपेक्ष यानि सबसे स्वतन्त्र है व सभी के लिए समान है। सत्य ईश्वर स्वरूप है। सत्य की उपासना करने वाले चाहे उसे भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं तथापि सत्य यानि सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान परब्रह्म परमेश्वर एक ही है व सबका सांझा है। इसलिए तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

कोई पुकार रिहा श्री राम जी,
कोई पुकारे कृष्ण महाराजा
कोई पुकारे दस पातशाह जी
इक रूप अनेक नाम पुकारे ओ है
ओ सब दा सांझा

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ चतुर्थ सोपान, कीर्तन न० 27)

कमाल की बात तो यह है कि केवल प्राणी ही नहीं

अपितु सम्पूर्ण दृश्यमान प्रकृति भी सत्य से परिचालित, प्रभावित, प्रेरित और अनुशासित है। सत्य ही आत्मज्ञान और आत्मसाक्षात्कार का द्वार है यानि मानव को गुण-दोषयुक्त प्रकृति से उबार कर, माननीय व महिमायुक्त बनाने का श्रेय सत्य को ही जाता है। इसके अतिरिक्त सत्य मानव को पूर्णतः आवृत्त करने वाला वह गुण है, जो विचार, वाणी और आचार द्वारा अभिव्यक्त होता है। इस तरह सत्य के आश्रय से ही व्यक्तित्व गौरवान्वित हो सकता है और सत्य मार्ग पर चलने से ही ब्रह्म में लीन हो मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। इसलिए तो कहा जाता है कि सत्य सर्वविजयी है यानि सत्यमेव जयते। आओ सजनों आज आगे जानें की सच्चा मानव कौन कहलाता है?

सच्चा -कौन?

ज्ञात हो कि जो ईश्वर द्वारा प्रदत्त गुरुमत अनुसार सत्य का अपने मन में विकास कर, निश्छल हृदय से सच्ची बात कह देता है और निःस्वार्थ भाव से सदा सत्कर्म करता है वह निष्कपट, सरल व विशुद्ध, चरित्रवान व ईमानदार, विश्वस्त व खरा,

बुद्धिमान व सदाचारी, शक्तिशाली व न्यायकारी इंसान सच्चा इंसान कहलाता है और सद्‌गुण सम्पन्न होने के कारण श्रेष्ठ, पुण्यात्मा अथवा सज्जन पुरुष के नाम से जाना जाता है। सत्य का साधक ऐसा आत्मतुष्ट व धीर इंसान सकल सृष्टि के प्रति एकात्मा का भाव रखते हुए परस्पर आत्मीयतापूर्ण व्यवहार करता है और अमरता का प्रतीक बन, निर्भयता से इस जगत में धर्मसंगत विचरते हुए तथा निष्काम भाव से अपना व सबका उद्धार करते हुए, प्रभु संग मेल खा जाता है। इस तरह मन-वचन-कर्म द्वारा एकरस रहने वाले व एकता का व्यवहार करने वाले उस सत्यार्थी का लोक-परलोक दोनों संवर जाता है और उसके विषय में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार कहा जाता हैः-

जेहड़ा सच सच वर्ताव दिखाता है,
ओ दीदार महाराज जी दा पाता है
जेहड़ा सच वर्ते सच वर्त वर्तावे,
ओ मेल महाराज जी नाल खाता है

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ सप्तम सोपान,
प्रथम भाग, कीर्तन न0 2)

इस तथ्य से सजनों स्पष्ट होता है कि सत्य का आचरण व व्यवहार सदा प्रशंसनीय है तथा ऐसे सच्चे, सूक्ष्म विचारक, विवेकशील सजनों की पराकाष्ठा सर्वश्रेष्ठ युग सतयुग में प्रमाणित होती है। तभी तो उनके विषय में कहा जाता है:-

सतवस्तु जिन्हां ने पहचान लई,
सत करे वर्ताओ,
सत है ओन्हां दे घर दी रसम,
सत है रसम रिवाज़
सतवस्तु दी रमज़ जैं समझ लई,
सत चीज़ जिन्होंने पछान लई आ आ आ
ओ खावे खुराक निराली है,
अक्ख होवे परखण वाली है।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ चतुर्थ सोपान,
कीर्तन न० 55)

आप भी ऐसा सच्चा मानव बन सतयुग में प्रवेश करना चाहते हो तो अब ध्यान से सुनो कि सत्य का कैसे अपने अन्दर विकास करना है:-

सत्य को विकसित करने के साधन

सत्य का अपने मन में विकास करना है तो सर्वोच्च सत् तत्त्व अर्थात् ईश्वर या परमात्मा के प्रति दृढ़ आस्था व विश्वास रखो। इसी के साथ परमात्मा के अंशभूत सभी जीवात्माओं अथवा प्राणियों के प्रति आत्मीयता, सहृदयता, संवेदनशीलता और सेवा का भाव रखते हुए, आपस में निष्कामता से विनम्रतापूर्ण सत्यतायुक्त आचार-व्यवहार करो। ऐसा करने से जिह्वा स्वतन्त्र, संकल्प स्वच्छ, दृष्टि कंचन, वृत्ति-स्मृति,बुद्धि व स्वभाव निर्मल, हृदय सचखंड, अंतःकरण उदार और विशाल बनेगा तथा समस्त सृष्टि के प्रति सज्जनता यानि एकात्मा का भाव पनपेगा। फलतः स्वार्थ-भावना, काम/कामना, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, राग-द्वेष, ईर्ष्या, घृणा आदि जैसे बुरे भावों का स्वतः अंत होगा और सत्य का हृदय में स्थाई यानि नित्य वास रहेगा। ऐसा होते ही आपके लिए ख़्याल-ध्यान समरसता से आत्मप्रकाश में स्थित रखना सहज व सरल हो जाएगा और आप बिना किसी अन्य यत्न के स्वतः ही आत्मज्ञानी बन जाओगे व ब्रह्म नाम

कहाओगे। इस संदर्भ में युग पुरुषों व अनेकानेक ऐसे महापुरुषों का उदाहरण आपके सामने ही है जिन्होंने जीवन में सत्य को पूरी तरह विकसित और प्रतिष्ठित करके संसार के सामने सत्य के व्यापक स्वरूप को व्यावहारिक रूप में प्रकट कर दिखलाया। अतः उन की भांति आप भी सत्य के सफ़ल साधक बनो। जैसा कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह भी रहा हैः-

झूठ पहरेवा लहाणा जे सजनों
जेहड़ा करदा जे औखा।
सच दा पहरेवा पाना जे जेहड़ा करदा ओ
सौखा, जेहड़ा करदा ओ सौखा।।
सच ओ मौज उड़ावे, झूठ ओ ठोकरां खावे।
ठोकरां खा-खा उठ-उठ के ओ, फिर ओ सजन
पछतावे, फिर ओ सजन पछतावे।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ सप्तम सोपान,
प्रथम भाग, कीर्तन न० 2)

आशय यह है कि यदि आनन्द से जीवन गुज़ारना चाहते हो तो सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने के लिए सदा उद्यत रहो तथा सब काम

धर्मानुसार, सत्य-असत्य का विचार करके करो। याद रखो विचार जो ईश्वर के मुख की वाणी है यानि गुरुमत है अथवा आत्मा की आवाज़ है, उस द्वारा ही सत्यज्ञान प्राप्ति सुलभ हो सकती है। ऐसा इसलिए क्योंकि बार-बार विचार को पकड़ने से ही, सत्-जबान हो सकती है और एक दृष्टि एक दर्शन हो सकता है अर्थात् सत् स्वरूप प्रकाशित हो सकता है और हम हर हाल में एकता, एक अवस्था में बने रह सकते हैं। इस महत्ता के दृष्टिगत सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसारः-

विचार नूं सजनों पकड़ो सत् करो ज़बान
ओ एक दृष्टि ओ एकता, एकता पकड़ो महान

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ सप्तम सोपान,
तृतीय भाग, कीर्तन न० 22)

यहाँ सजनों ध्यान से सत्य को आरंभ से लेकर व्यवहार में लाने की क्रिया को समझो। इस संदर्भ में ज्ञात हो कि पहले विचार को पकड़ना है, फिर जिह्वा द्वारा सदा सत्य वचनों का उच्चारण करते हुए अपने हृदय अथवा शरीर रूपी मकान को सत्य के प्रकाश से भरपूर कर, इस कदर सचखंड बना

लेना है कि इसकी सुगंधि देवलोक की सुगंधि को भी मात कर देवे। इस तरह ईमानदारी से मन-वचन-कर्म द्वारा सत्य पर पकड़ बना, यथार्थता अनुरूप आचार-व्यवहार करने वाले सत्यार्थी बनना है और अपने असली निरंकार स्वरूप को जान जाना है। जैसा कि कहा भी गया है:-

सच सच जिह्वा कर सचखण्ड भर लौ,
सच सच सजनों सच नूं फड़ लौ।
फिर निरंकार अपना आप ही जानी।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ सप्तम सोपान,
प्रथम भाग, कीर्तन न० 33)

जब इतना हो गया तो फिर सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमारा पथप्रदर्शन करते हुए कहता है कि:-

सच वर्तो सच वर्त वर्ताओ,
फिर सच उपदेश सच दी पौड़ी चढ़ाओ।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ सप्तम सोपान,
प्रथम भाग, कीर्तन न० 33)

अर्थात् स्वयं सत्य का आचरण करते हुए, एक-दूसरे के साथ भी सत्य का व्यवहार करो व करवाओ। इस तरह सबको सत्ययुक्त धर्म-प्रवचनों

द्वारा सन्मार्ग पर ला, सुगमता से अपने जीवन का प्रयोजन, समयबद्ध सिद्ध करने के योग्य बनाने हेतु, सच की पौढ़ी चढ़ाओ यानि समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुरूप क्रमवार सत्य पथ पर प्रशस्त होने की युक्ति बताओ ताकि वे भी इस युक्ति के अनुशीलन द्वारा अपने संकल्प कुसंगी को संगी बना व सम, संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म के सवाल हल कर आत्मोद्धार करने के योग्य बन जाएं। मानो यही असली बंदगी है। इसी बंदगी द्वारा ही समस्त संशय-भ्रमों, मिथ्या विचारों व इच्छाओं से छुटकारा मिल सकता है और शांति-शक्ति का मन में प्रसार हो सकता है। इसलिए तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

भक्ति सच धर्म दी कर,
फिर इन्सान नूं मौत दा न रिहा डर।
शक्ति दा हथियार हाथों में फड़,
बेख़ौफ़ा बेख़तरा जगत में विचर।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान,
द्वितीय भाग, कीर्तन न0 12)

अभिप्राय यह है कि वर्तमान युग में प्रचलित आडम्बरी भक्ति भावों को छोड़ कर, समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार सत्य-धर्म की

निष्कामतापूर्वक भक्ति भाव से आराधना करो। अन्य शब्दों में अपने शाश्वत स्वरूप के ही सर्वत्र होने का सत्यता से बोध करते हुए तद्नुकूल परस्पर मानवता/सज्जनता का धर्मसंगत सद्व्यवहार करो। जानो इस प्रकार हर हाल में एकरस रहने से सारा ब्रह्माण्ड एक सजन हो जाएगा और मौत का भय नहीं रहेगा। ऐसा होने पर ही शांति-शक्ति धारण कर, निर्भयता से इस जगत में विचर सकोगे और अपना नाम रौशन कर लोगे।

यह है सजनों भक्ति का सार। जो शास्त्रविहित् इस सार को समझ जाता है उसके लिए कुछ भी अन्य जानना शेष नहीं रह जाता क्योंकि तब सत्-ज़बान हो जाती है, सत् ही हृदय में होता है और सच का ही वर्त्त-वर्त्ताव होता है। इस प्रकार मन-वचन-कर्म द्वारा सत्य को समरसता से धारण करने पर, शरीर रूपी मकान सचखंड यानि सच्चाई से इस कदर भर जाता है कि फिर उसकी स्वाभाविक सुगंधि यानि यश-कीर्ति देश-देशान्तर फैलती हुई, देवलोक को भी हर्षा देती है। ऐसा उद्यम दिखाने पर सच्चाई का सवाल हल हो जाता है और इंसान सत्य का प्रतीक बन जाता है। इस कथन की पुष्टि में ही सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

फिर सच होवे जबान, सच होवे हृदय,
सच होवे वर्त वर्ताओ।
फिर शरीर रूपी मकान नूं सच खण्ड बनाओ,
फिर फैले सुगन्धि ओ
सजनों तुहाडी देश देशान्तर।
इस तरीके नाल देव लोक नूं हर्षाओ,
देव लोक नूं हर्षा लवो सजनों,
देव लोक नूं हर्षाओ।
फिर सजन सच्चाई वल्लों फतह पा गया ओ
सजन सच्चाई वल्लों फतह पा गया।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ सप्तम सोपान,
तृतीय भाग, कीर्तन न० 16)

निष्कर्ष

निष्कर्ष यह है कि विचार द्वारा सत् बोध करने से ही आत्मबोध किया जा सकता है और वासना का नाश हो सकता है। इसके विपरीत जब तक सत्य का ज्ञान नहीं होता तब तक भौ-भ्रम नहीं मिटता। अज्ञानी इसी भ्रम में जीता है इसलिए स्थूल शरीर को ही अपना स्वरूप मान उसके सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझ बैठता है और रोते-झुखते

हुए नकारा जीवन व्यतीत करता है। आपके साथ ऐसा न हो इस हेतु सजनों एक अत्यन्त विनम्र व गंभीर साधक की भांति, सत् की खोज कर यानि हर एक बात के संदर्भ में धारणीय व त्याज्य का सही तरीके से विचार कर, जो उचित हो उसे समर्पित भाव से अमल में लाओ और अपने जीवन को सत् अनुरूप बनाओ। इस प्रयोजन में कामयाब होने हेतु शास्त्र कह रहा है किः-

कलुकाल दा पहरेवा बदल के ते,
सतवस्तु नाल प्रेम बढ़ावो सजनों।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ सोपान,
तृतीय कीर्तन न० 33)

अर्थात् कलियुग की विकारयुक्त मलीन स्वाभाविक पोशाक बदल कर, हृदय प्रकाशित सत्-वस्तु के संग प्रेम व प्रीति बढ़ाओ। ऐसा करने से ख़्याल सदा सत्ययुक्त व सकारात्मक रहने लगेगा व वृत्ति, स्मृति, बुद्धि व भाव स्वभाव रूपी बाणा निर्मल होता जाएगा। परिणामतः अंतर्निहित सत्-चित्त्-आनन्द स्वरूप का बोध होगा और अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को पा जाओगे।

Learn the science of inner dimensions

at **Dhyan-Kaksh**

School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

ध्यान-कक्ष

- ध्यान-कक्ष यानि समभाव-समदृष्टि का स्कूल (परिचय)

आत्मज्ञान

- आत्मज्ञान
- आत्मज्ञानी की पहचान
- आत्मिक ज्ञान के लिए पहली आवश्यकता
- आत्मिक ज्ञान एवं भौतिक ज्ञान में अंतर
- आत्मिक ज्ञान प्राप्ति से लाभ

शरीर/प्राण/भाव/दृष्टि को सम रखना

- शीश अर्पण व शारीरिक समता साधने का महत्त्व
- प्राण को सम रखने की कला
- भाव
- समभाव
- समभाव साधना
- समदृष्टि
- समबुद्धि एंव समभाव-समदृष्टि का व्यावहारिक रूप

अपनी पहचान

- निज मानव स्वरूप की पहचान
- यथार्थ ब्रह्म स्वरूप की पहचान
- ब्रह्म
- शब्द ब्रह्म
- ओ३म शब्द की महानता व महत्ता

समभाव-समदृष्टि का कायदा

- जिह्वा स्वतन्त्र अर्थात् आहार एवं वाणी संयम
- संकल्प स्वच्छ
- दृष्टि कंचन

आत्मविजय

- आत्मनिरीक्षण
- आत्मसंयम/आत्मनियन्त्रण (भाग-1 और-2)
- आत्मानुशासन एवं आत्मविजय

विचार एवं विवेक

- विचार
- विवेक
- विवेक जाग्रति
- विवेकशील मानव की पहचान

Offline classes and activities

Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm

at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara,
Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes can be viewed at

Learn the science of inner dimensions
at **Dhyan-Kaksh**
School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

मानवता के गुण

- संतोष-परिभाषा
- संतोष विकसित करने का साधन
- धैर्य-परिभाषा
- धैर्य का व्यावहारिक रूप
- धीर व्यक्ति की पहचान व धैर्य धारणा से लाभ
- सत्य-परिभाषा
- सत्य को विकसित करने का साधन
- सत्-संगति की महत्ता
- सत्यभाषी बनने की महत्ता
- धर्म-परिभाषा
- धर्म का विषय एवं उद्देश्य
- धर्म के निमित्त समर्पण
- निष्कामता-अर्थ
- निष्काम रास्ते की बाधा एवं उससे उबरने की युक्ति
- परोपकार

चित्त-वृत्तियों के निरोध का साधन

- अभ्यास-अर्थ
- अभ्यास सफलता का मूल
- वैराग्य
- वैराग्य-कसौटी
- मौन-अभिप्राय
- मौन और वाणी
- मौन का जीवन महत्त्व

Offline classes and activities
Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm
at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara,
Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes can be viewed at

आप इस विषय का वीडियो निम्नलिखित लिंक (QR code) पर स्कैन करके देख सकते हैं

View this class by scanning this QR code link

Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
www.humanityolympiad.org

HUMANITY DEVELOPMENT CLUB
www.awakehumanity.org

INTERNATIONAL OPEN ORATORY CONTEST
www.dhyankaksh.org

INTERNATIONAL OPEN POETRY RECITATION CONTEST
www.dhyankaksh.org

For FREE workshops in your School, College and groups

Scan for Dhyan-Kaksh Social Media

Contact

Mobile : +91 8595070695
Email: contact@dhyankaksh.org
Website: www.dhyankaksh.org

Scan for Dhyan Kaksh Location

https://bit.ly/3v4O8B2

Disclaimer: The contents of this book are intended to foster universal human values, consciousness, fraternity, and love for humanity without endorsing or promoting any specific religious belief